अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2025) दिनांक : 17.12.2025

समय सीमा : 3 घंटा षष्टम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

गतागत–40

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें (आगति व गति–कितनी व कहां-कहां से)– 24

(क) चक्रवर्ती में।

(ख) अचरम में।

(ग) मूल वैक्रिय शरीर में।

(घ) चक्षुदर्शन में।

(ड़) पंडित वीर्य में।

(च) बलदेव में।

(छ) असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में।

(ज) चतुर्थ नरक में।

(झ) बादर एकेन्द्रिय में।

(ञ) छप्पन अन्तर्द्वीप के यौगलिक में।

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) दूसरे देवलोक में आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(ख) सम्यक् मिथ्यादृष्टि में आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(ग) कापोत लेश्या वाले कापोत लेश्या में जाएं तो आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(घ) जीव के 563 भेद लिखें।

(ड़) भरत क्षेत्र, जम्बूद्वीप व अर्द्धपुष्कर द्वीप में जीव के कितने भेद हैं? विस्तार से लिखें।

कायस्थिति–40

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 30

(क) सवेदी की कायस्थिति सादि-सांत किस अपेक्षा से ली गई है?

(ख) अवधि दर्शनी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है एवं किस अपेक्षा से है?

(ग) पुद्गल परावर्तन में आहारक शरीर का ग्रहण क्यों नहीं किया गया है?

(घ) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?

(ड़) मनुष्य की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से है? स्पष्ट करें।

(च) नील लेश्यी की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य-उत्कृष्ट अंतर लिखें।

(छ) सम्यग् दृष्टि की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य-उत्कृष्ट अंतर लिखें।

(ज) बादर पृथ्वी, अप, तेजस, वायु, प्रत्येक शरीरी वनस्पति की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति तथा जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(झ) सामायिक-चारित्र, छेदोपस्थापनीय की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति तथा जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ञ) छद्मस्थ अनाहारक की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति तथा जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

(ट) पर्याप्त की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति तथा जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से है?

(ठ) मनःपर्यवज्ञानी की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति एवं जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा जघन्य कायस्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

प्र. 4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) सयोगी केवली अनाहारक की जघन्य स्थिति कितनी है एवं किस अपेक्षा से है?

(ख) मनुष्यणी की कायस्थिति में अन्तर अन्तर्मुहुर्त्त किस अपेक्षा से लिया गया है?

(ग) वनस्पति की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?

(घ) त्रीन्द्रिय पर्याप्त की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?

(ड़) मनयोगी की जघन्य कायस्थिति एक समय किस अपेक्षा से है?

(च) उपशम वेदी की जघन्य कायस्थिति एक समय किस अपेक्षा से है?

(छ) पद्मलेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है एवं किस अपेक्षा से है?

(ज) संयतासंयती की उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

(झ) काययोगी की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है एवं किस अपेक्षा से ली गई है?

(ञ) तेजसकाय पर्याप्त की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?

(ट) सकषायी की कायस्थिति अनादि सांत किस अपेक्षा से ली गई है?

(ठ) कायपरीत की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है एवं उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

गीतिका (पांचों वर्षों की)–20

प्र. 5 किन्हीं चार पद्यों को लिखें– 16

(क) सरधा दुर्लभ.....जमारो पाई रे।

(ख) पुलाक.....दृष्टान्त जाण।

(ग) साधू संगत.....पड़ै ए।

(घ) आयु कर्म.....मिलावै रे।

(ड़) असंजती श्रावक.....आप ए।

(च) समकित आयां.....हि कर्म।

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) छठा गुणस्थान कब बदलता है?

(ख) द्रौपदी पांच पुरूषों की पत्नी क्यों बनी?

(ग) कायंति दान किसे कहते हैं?

(घ) देश मोहनीय कर्म का उपशम निष्पन्न भाव किन गुणस्थानों में होता है?

(ड़) व्रत-अव्रत के पृथक्करण का रहस्य कहां उपलब्ध होता है?

(च) बकुश निर्ग्रन्थों की संख्या कम से कम कितनी होती है तथा ये किस गुणस्थान में होते हैं?